



रोजगार के अभाव का युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. रेखा तिवारी

प्राचार्य (शिक्षा विभाग)

केशरी शिक्षण समिति खोखरा, जॉजगीर

Email - trekha694@gmail.com

सारांश

आज के समाज में युवाओं में बेरोजगारी एक गंभीर समस्या बन चुकी है, जिसका प्रभाव व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर देखा जा सकता है। युवाओं में रोजगार की कमी मानसिक तनाव, अवसाद और आत्मविश्वास की कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न करती है। आर्थिक अस्थिरता के कारण युवा अपने जीवन यापन, परिवारिक जिम्मेदारियाँ और सामाजिक अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाते, जिससे उनका जीवन असंतुलित और निर्भरशील बन जाता है। बेरोजगारी से युवाओं में सामाजिक असुरक्षा, अपराध की प्रवृत्ति और अवैध गतिविधियों की ओर झुकाव बढ़ता है। इसके अलावा, लंबे समय तक कार्य न मिलने से उनकी प्रतिभा, कौशल और दक्षता भी घटती है। रोजगार की कमी के कारण युवा वर्ग प्रवास की ओर मजबूर होता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमबल की कमी और शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या दबाव बढ़ता है। बेरोजगारी से समाज में असंतोष, विरोध और सामाजिक असंतुलन उत्पन्न होता है, जो देश की स्थिरता और विकास के लिए खतरा बन सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि युवाओं को कौशल विकास, स्वरोजगार, स्टार्टअप और सरकारी योजनाओं के माध्यम से रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएँ।

अध्ययन से यह समझा जा सकता है कि रोजगार के अभाव के कारण उत्पन्न समस्याएँ न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करती हैं बल्कि समाज और राष्ट्र की आर्थिक-सामाजिक प्रगति पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। उचित नीतियों, शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से युवाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना अत्यंत आवश्यक है, ताकि वे अपने जीवन और समाज के विकास में योगदान दे सकें।

बीज शब्द

रोजगार का अभाव, बेरोजगारी, युवा वर्ग, मानसिक तनाव, अवसाद, आर्थिक अस्थिरता, सामाजिक असुरक्षा, अपराध की प्रवृत्ति, प्रतिभा का ह्रास, प्रवास (Migration), सामाजिक असंतुलन, आत्मविश्वास की कमी, शिक्षा और रोजगार का अंतर, कौशल विकास, स्वरोजगार, आत्मनिर्भरता, सरकारी नीतियाँ, सामाजिक विकास, आर्थिक प्रगति, युवा सशक्तिकरण।

प्रस्तावना

2008 में संकट की शुरुआत से ही युवा बेरोजगारी में वृद्धि देखी जा रही है। इससे भी अधिक चिंताजनक बात यह है कि रोजगार, शिक्षा या प्रशिक्षण से वंचित युवाओं की संख्या में नाटकीय वृद्धि हुई है, जिससे सामाजिक सामंजस्य पर पड़ने वाले प्रभाव और एक **“खोई हुई पीढ़ी”** की आशंकाओं को लेकर व्यापक चिंताएँ पैदा हुई हैं।

सदस्य देशों के बीच युवा बेरोजगारी के स्तर में भारी अंतर को देखते हुए, यह स्पष्ट है कि पूरे यूरोपीय संघ में कोई भी एक श्रम बाजार नीति उपयुक्त नहीं होगी। हालाँकि, युवा बेरोजगारी से निपटने के तरीकों पर आपसी समझ के अवसर हो सकते हैं। यह फोरम इंग्लैंड, बेल्जियम, स्पेन, पोलैंड और आयरलैंड के केस स्टडीज के माध्यम से यूरोपीय संघ में युवा बेरोजगारी की पड़ताल करता है। यह एक संभावित समाधान के रूप में जर्मनी की दोहरी व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रणाली की भी जाँच करता है।

आज के युग में बेरोजगारी केवल एक आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि एक गम्भीर सामाजिक, मानसिक और राष्ट्रीय चुनौती बन चुकी है। विशेष रूप से युवाओं के बीच रोजगार का अभाव समाज के समग्र विकास में एक बड़ी बाधा के रूप में उभर रहा है। युवा किसी भी राष्ट्र की शक्ति, ऊर्जा और भविष्य का प्रतीक होते हैं। यदि यही युवा वर्ग निष्क्रिय, निराश और बेरोजगार हो जाए, तो वह समाज की प्रगति के लिए खतरा बन सकता है। भारत जैसे विकासशील देश में यह समस्या अत्यधिक गहराई से महसूस की जा रही है, जहाँ जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, परंतु रोजगार के अवसर उसी अनुपात में नहीं बढ़ पा रहे हैं।

युवाओं में शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ ही अपेक्षाएँ भी बढ़ी हैं। प्रत्येक युवा यह चाहता है कि उसे उसकी योग्यता और परिश्रम के अनुरूप सम्मानजनक रोजगार मिले। लेकिन वास्तविकता यह है कि शिक्षित युवा भी आज नौकरी के लिए दर-दर भटकने को विवश हैं। अनेक बार यह देखा गया है कि स्नातक, परास्नातक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त युवा भी छोटे-मोटे कार्य करने को मजबूर हो जाते हैं। यह स्थिति न केवल उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाती है, बल्कि उनके मनोबल को भी तोड़ देती है। रोजगार के अभाव का सीधा असर युवा पीढ़ी के मानसिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और सामाजिक जीवन पर पड़ता है। बेरोजगारी से उत्पन्न हताशा कई बार अवसाद, नशाखोरी, आत्महत्या और अपराध जैसी प्रवृत्तियों को जन्म देती है। ऐसे में एक सशक्त और ऊर्जावान युवा वर्ग धीरे-धीरे निष्क्रिय और असंतोषी बनता जा रहा है। यह केवल व्यक्तिगत हानि नहीं है, बल्कि समाज और राष्ट्र की आर्थिक-सामाजिक प्रगति के लिए भी घातक है।

रोजगार का अभाव केवल व्यक्तिगत क्षमता की कमी नहीं, बल्कि कई संरचनात्मक कारणों से जुड़ा हुआ है। जैसे शिक्षा प्रणाली का व्यावहारिक कौशल से जुड़ा न होना, औद्योगिक विकास की धीमी रफ्तार, तकनीकी बदलाव से पारंपरिक नौकरियों का समाप्त होना, और सरकारी नीतियों में असंतुलन। ग्रामीण क्षेत्रों में तो स्थिति और भी गंभीर है, जहाँ कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के कारण वैकल्पिक रोजगार के अवसर बहुत सीमित हैं।

आज का युवा वर्ग जब निरंतर प्रयासों के बाद भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता, तो उसमें असुरक्षा, अविश्वास और समाज के प्रति असंतोष की भावना बढ़ जाती है। यह असंतोष धीरे-धीरे सामाजिक असंतुलन का रूप ले सकता है, जिससे विरोध, हिंसा और अस्थिरता जैसी परिस्थितियाँ जन्म लेती हैं।

इसलिए, आवश्यक है कि सरकार, समाज और शिक्षण संस्थान मिलकर ऐसी नीतियाँ बनाएं जो युवाओं को न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करें, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और नवाचार के प्रति प्रेरित करें। कौशल विकास, स्वरोजगार और स्टार्टअप को प्रोत्साहन देने से इस समस्या का स्थायी समाधान निकाला जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता

आज के युवाओं के सामने बेरोजगारी एक गंभीर सामाजिक और आर्थिक समस्या बन चुकी है। युवाओं की संख्या अधिक होने के कारण रोजगार की कमी उनकी व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक स्थिति पर गहरा प्रभाव डालती है। बेरोजगारी से उत्पन्न मानसिक तनाव, अवसाद, अपराध प्रवृत्ति और सामाजिक असंतुलन जैसी समस्याएँ समाज में स्थिरता और विकास के लिए खतरा हैं।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए है ताकि यह समझा जा सके कि किस प्रकार रोजगार के अभाव से युवा वर्ग प्रभावित हो रहा है और इसके परिणामस्वरूप समाज और देश पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। अध्ययन से नीति निर्माण, कौशल विकास और स्वरोजगार जैसे उपायों की दिशा स्पष्ट होगी।

अध्ययन का उद्देश्य

1. युवाओं में रोजगार के अभाव के कारण उत्पन्न समस्याओं को समझना और उनका विश्लेषण करना।
2. बेरोजगारी के मानसिक, आर्थिक और सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करना।
3. यह जानना कि किस प्रकार बेरोजगारी युवाओं के आत्मविश्वास, कौशल और प्रतिभा पर असर डालती है।
4. बेरोजगारी और अपराध, नशाखोरी, प्रवास जैसी सामाजिक समस्याओं के बीच संबंध स्थापित करना।
5. रोजगार की कमी से समाज में असंतोष और असामाजिक गतिविधियों के बढ़ने के कारणों का पता लगाना।
6. युवाओं के लिए कौशल विकास, स्वरोजगार और सरकारी योजनाओं के महत्व को समझना।
7. यह अध्ययन नीति निर्माताओं, शिक्षण संस्थानों और समाज को रोजगार सृजन और युवा सशक्तिकरण के उपाय सुझाने में मार्गदर्शन करेगा।
8. बेरोजगारी के प्रभावों को कम करने के लिए आवश्यक रणनीतियों और सुधारात्मक उपायों की पहचान करना।

भारत में युवा रोजगार के वर्तमान रुझान क्या हैं?

युवा बेरोजगारी संकट

उच्च युवा बेरोजगारी दर— युवाओं (15–29 आयु वर्ग) में बेरोजगारी की दर सामान्य आबादी की तुलना में व्यापक रूप से अधिक है। वर्ष 2022 में शहरी युवाओं के लिये बेरोजगारी दर 17.2% थी, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह 10.6% थी।

युवा महिलाओं के लिये यह स्थिति विशेष रूप से गंभीर है, जिनके बीच युवा पुरुषों के 15.8% की तुलना में 21.6% बेरोजगारी दर पाई जाती है।

शिक्षा का प्रभाव— युवाओं में उच्च शिक्षा प्राप्ति विरोधाभासी रूप से उच्च बेरोजगारी दरों से जुड़ी हुई है। उदाहरण के लिये, वर्ष 2022 में माध्यमिक शिक्षा या उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों के लिये बेरोजगारी दर 18.4% और स्नातकों के लिये 29.1% थी, जबकि निरक्षर व्यक्तियों के लिये यह दर मात्र 3.4% थी।

- NEET (Not in Employment, Education, or Training) दर- युवाओं का एक बड़ा अनुपात न तो रोजगार में संलग्न है, न ही शिक्षा में और न ही प्रशिक्षण में।
- भारत रोजगार रिपोर्ट (India Employment Report) 2024 के अनुसार, वर्ष 2022 तक प्रत्येक तीन में से एक युवा NEET श्रेणी में शामिल था।
- NEET श्रेणी में महिलाओं की संख्या उनके पुरुष समकक्षों की तुलना में लगभग पाँच गुना अधिक है।

लैंगिक असमानता—

- कार्य सहभागिता दर (Work Participation Rates)— शहरी पुरुष युवाओं की कार्य सहभागिता दरें उनकी महिला समकक्षों की तुलना में तीन गुना अधिक हैं।
- महिलाओं के लिये बेरोजगारी दरें युवा महिलाओं को युवा पुरुषों की तुलना में लगातार उच्च बेरोजगारी दर (औसतन लगभग 50% अधिक) का सामना करना पड़ रहा है। उदाहरण के लिये, वर्ष 2022 में 34.5% महिला स्नातक बेरोजगार थीं, जबकि उनके पुरुष समकक्षों के लिये यह अनुपात 26.4: था।
- शिक्षित युवा महिलाओं में बेरोजगारी दर सबसे अधिक है, जहाँ 34.5% महिला स्नातक बेरोजगार हैं।

क्षेत्रीय विविधताएँ—

- राज्यों के बीच असमानताएँ—** अलग-अलग राज्यों में रोजगार की स्थिति व्यापक रूप से भिन्न-भिन्न है। बिहार, उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, राजस्थान, ओडिशा, केरल, हिमाचल प्रदेश और असम जैसे राज्यों में उच्च बेरोजगारी दर और निम्न कार्य बल भागीदारी विशेष रूप से व्याप्त है।
- इसके अलावा, एक स्पष्ट सकारात्मक संबंध पाया जाता है, जहाँ उच्च शहरीकृत राज्यों में बेरोजगारी दर में वृद्धि देखी जाती है। यह उच्च शहरीकृत गोवा एवं केरल जैसे राज्यों में बेरोजगारी के उच्च स्तर और निम्न शहरीकृत उत्तर प्रदेश, झारखंड एवं मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में बेरोजगारी के निम्न स्तर की व्याख्या करता है।
- शहरीकृत राज्यों में कृषि और कृषि पर निर्भर क्षेत्र आकार में छोटे होते हैं, इसलिये वहाँ अनौपचारिक रोजगार के स्रोत अपेक्षाकृत कम होते हैं।

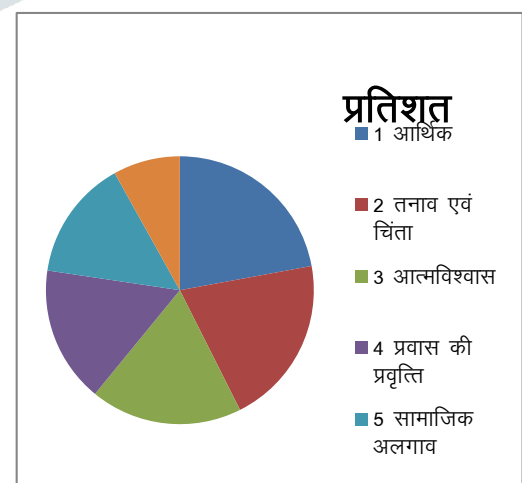
डेटा

यह अध्ययन द्वितीयक डेटा स्रोतों का उपयोग करके किया गया है। इस अध्ययन के लिए प्रयुक्त डेटा 2021-22 (जुलाई 2021 से जून 2022) के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) से लिया गया है।

2021-22 का पीएलएफएस, 2021 की अनुमानित जनसंख्या के आधार पर 1,01,782 परिवारों और 4,28,525 व्यक्तियों का एक राष्ट्रीय प्रतिनिधि नमूना है। इसके अतिरिक्त, भारत में युवा बेरोजगारी की प्रवृत्ति का संक्षिप्त अवलोकन देने के लिए, युवा बेरोजगारी दर का अनुमान लगाने हेतु 2017-18, 2018-19, 2019-20 और 2020-21 के पीएलएफएस दौर का उपयोग किया गया है।

भारत में युवा बेरोजगारी की प्रवृत्ति और रोजगार की प्रकृति

2017-18 से 2021-22 के दौरान भारत में युवा बेरोजगारी दर के रुझानों को दर्शाती है। इस अवधि के दौरान, युवा बेरोजगारी दर में 17.9% से 12.4% तक लगातार गिरावट देखी गई है। इसी अवधि के दौरान, शहरी बेरोजगारी दरें ग्रामीण बेरोजगारी दरों की तुलना में लगातार ऊँची बनी हुई हैं। 2017-18 में बेरोजगारी दर में गिरावट के साथ, यह दोनों लिंगों में देखी गई है, हालाँकि महिला बेरोजगारी दर में गिरावट पुरुष समकक्षों की तुलना में थोड़ी तेज है।



महिला शिक्षा कारक

भारत में युवा बेरोजगारी में शिक्षा का स्तर महत्वपूर्ण रूप से महत्वपूर्ण है। मध्यम और माध्यमिक शिक्षा के लिए माध्य पर सीमांत प्रभाव 0.06 है, जो दर्शाता है कि मध्यम और माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति के लिए बेरोजगार होने की अनुमानित संभावना अशिक्षित लोगों की तुलना में 0.06 अधिक है। साथ ही, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले युवा के बेरोजगार होने की संभावना अशिक्षित युवाओं की तुलना में 0.139 गुना बढ़ जाती है।

सामान्य प्रभाव

1. मानसिक प्रभाव (Mental Impact)— बेरोजगारी का युवाओं पर सबसे गहरा असर उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। जब कोई युवा शिक्षा प्राप्त करने और मेहनत करने के बावजूद नौकरी नहीं पा पाता, तो उसके भीतर आत्मविश्वास की कमी आने लगती है। धीरे-धीरे वह खुद को असफल और अनुपयोगी महसूस करने लगता है। बेरोजगारी के लंबे समय तक बने रहने से तनाव, चिंता (Anxiety) और अवसाद (Depression) जैसी मानसिक बीमारियाँ जन्म लेती हैं। कई बार यह मानसिक दबाव इतना बढ़ जाता है कि युवा आत्मघाती विचारों तक पहुँच जाते हैं। समाज में बेरोजगार व्यक्ति को अक्सर तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता है, जिससे उसका आत्मसम्मान और अधिक आहत होता है। इसके परिणामस्वरूप वह समाज से अलग-थलग पड़ जाता है और सामाजिक गतिविधियों से दूरी बना लेता है। इसके अलावा, निराशा और असफलता की भावना युवाओं की सृजनात्मकता (Creativity) और नवाचार क्षमता को भी कमजोर कर देती है। कुल मिलाकर, रोजगार का अभाव युवाओं को मानसिक रूप से अस्थिर बनाकर उनकी कार्यक्षमता और जीवन के प्रति उत्साह दोनों को कम कर देता है।

2. आर्थिक प्रभाव (Economic Impact)—रोजगार का अभाव सीधे तौर पर व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर असर डालता है। नौकरी न मिलने से आय का कोई स्थायी स्रोत नहीं रहता, जिसके कारण युवा आर्थिक रूप से असुरक्षित महसूस करते हैं।

बेरोजगारी की स्थिति में व्यक्ति अपनी आवश्यक जरूरतें जैसे भोजन, वस्त्र, शिक्षा और स्वास्थ्य ठीक से पूरी नहीं कर पाता। यह स्थिति न केवल व्यक्ति, बल्कि उसके पूरे परिवार की आर्थिक स्थिरता को प्रभावित करती है। जब परिवार के युवा सदस्य कमाई नहीं करते, तो घर की जिम्मेदारी कुछ गिने-चुने लोगों पर आ जाती है। इससे परिवारिक तनाव बढ़ने लगता है।

आर्थिक अभाव के कारण कई बार युवा छोटे-मोटे काम या अस्थायी रोजगार करने को मजबूर हो जाते हैं, जिनसे उनका आत्मसम्मान घटता है। लंबे समय तक आर्थिक अस्थिरता रहने से व्यक्ति कर्ज में भी फँस सकता है। देश की दृष्टि से देखा जाए तो बेरोजगारी से उत्पादन और उपभोग दोनों घट जाते हैं, जिससे आर्थिक विकास की गति धीमी पड़ती है। अतः बेरोजगारी केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए भी गंभीर समस्या है।

3. सामाजिक प्रभाव (Social Impact)—बेरोजगारी का समाज पर गहरा असर पड़ता है। जब बड़ी संख्या में युवा बेरोजगार रहते हैं, तो समाज में असंतोष, असुरक्षा और अपराध की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है। बेरोजगार युवा अपने भीतर की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में न लगाकर नकारात्मक कार्यों की ओर झुक जाते हैं। अक्सर ऐसे युवाओं में नशे, जुए, चोरी और हिंसा जैसी आदतें विकसित हो जाती हैं। इससे समाज का नैतिक ढाँचा कमजोर होता है। बेरोजगारी से सामाजिक असमानता भी बढ़ती है कृ कुछ वर्ग सम्पन्न होते हैं, जबकि बेरोजगार वर्ग गरीब और हताश बना रहता है। इसके अलावा, बेरोजगारी विवाह, परिवार निर्माण और सामाजिक स्थिरता को भी प्रभावित करती है। युवा जब आर्थिक रूप से सक्षम नहीं

होते, तो वे विवाह या जिम्मेदारियों से कतराते हैं, जिससे सामाजिक संरचना में असंतुलन आता है। लंबे समय तक बेरोजगारी रहने पर समाज में विद्रोह, विरोध प्रदर्शन और अपराध दर बढ़ जाती है, जो सामाजिक शांति के लिए खतरा बनती है। इसलिए रोजगार समाज की स्थिरता और समरसता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

4. नैतिक और सांस्कृतिक प्रभाव (Moral – Cultural Impact)—रोजगार के अभाव का असर केवल आर्थिक या सामाजिक नहीं होता, बल्कि यह युवाओं के नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक आदर्शों को भी प्रभावित करता है। जब कोई युवा अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाता, तो उसमें नैतिकता के प्रति उदासीनता आ जाती है। अक्सर देखा गया है कि बेरोजगार व्यक्ति गलत रास्तों जैसे चोरी, रिश्वतखोरी या अवैध कार्यों की ओर झुक जाते हैं, ताकि वे आर्थिक रूप से स्थिर हो सकें। इस प्रकार समाज में भ्रष्टाचार और नैतिक पतन बढ़ने लगता है। इसके साथ ही, बेरोजगारी युवाओं की संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण पैदा कर सकती है। वे पारिवारिक जिम्मेदारियों से दूर भागने लगते हैं और भोगवादी जीवन की ओर आकर्षित हो जाते हैं। लंबे समय तक बेरोजगार रहने से व्यक्ति का आत्म-सम्मान और अनुशासन कमजोर पड़ जाता है। वह "जो मिलेगा, उसी रास्ते चलेगा" जैसी मानसिकता अपना लेता है। परिणामस्वरूप, समाज में नैतिक अव्यवस्था फैल जाती है। इसलिए रोजगार केवल आर्थिक साधन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और नैतिक विकास का भी आधार है।

5. राष्ट्रीय प्रभाव (National Impact)— बेरोजगारी का असर केवल व्यक्ति या समाज तक सीमित नहीं रहता यह देश की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिरता पर भी गहरा प्रभाव डालता है। जब देश की युवा आबादी काम न कर सके, तो वह राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति के बजाय बोझ बन जाती है। बेरोजगारी से उत्पादन घटता है, जिससे राष्ट्रीय आय और ऋक पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सरकार को बेरोजगारी भत्ता और सामाजिक योजनाओं पर अधिक खर्च करना पड़ता है, जिससे विकास कार्यों के लिए धन की कमी हो जाती है। इसके अलावा, बेरोजगार युवाओं में असंतोष बढ़ने से राजनीतिक अस्थिरता और आंदोलनों की स्थिति बन जाती है। यह राष्ट्र की शांति और प्रगति दोनों के लिए हानिकारक है। यदि देश के शिक्षित युवा बेरोजगार रह जाएँ, तो उनका विश्वास शासन व्यवस्था से उठ जाता है, जिससे लोकतांत्रिक प्रणाली पर भी खतरा उत्पन्न होता है। इस प्रकार, रोजगार का अभाव केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं बल्कि राष्ट्रीय विकास की राह में बड़ी रुकावट है। युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करना राष्ट्र की स्थिरता और समृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक है।

युवाओं पर पड़ने वाले प्रमुख प्रभाव—

1. मानसिक तनाव और अवसाद— रोजगार के अभाव का सबसे पहला और गहरा प्रभाव युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। जब कोई युवा लंबे समय तक प्रयास करने के बाद भी रोजगार प्राप्त नहीं कर पाता, तो उसके मन में निराशा, असंतोष और असफलता की भावना घर करने लगती है। यह स्थिति धीरे-धीरे मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद का रूप ले लेती है। बेरोजगार युवा स्वयं को समाज में असफल मानने लगता है और आत्मविश्वास खो देता है।

- कई बार परिवार और समाज की अपेक्षाएँ भी उस पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं, जिससे उसकी मानसिक स्थिति और अधिक अस्थिर हो जाती है। सामाजिक तुलना, आर्थिक तंगी और आत्मसम्मान की चोट से युवा अकेलापन महसूस करता है। इससे उसकी निर्णय लेने की क्षमता, कार्य करने की इच्छा और जीवन के प्रति दृष्टिकोण नकारात्मक हो जाता है।

- लंबे समय तक बेरोजगारी की स्थिति में व्यक्ति में आत्महत्या की प्रवृत्ति, नशे की लत या समाज से दूरी जैसी गंभीर समस्याएँ विकसित हो सकती हैं। इस प्रकार, रोजगार का अभाव केवल आर्थिक नहीं बल्कि एक गम्भीर मानसिक संकट का कारण भी बन जाता है, जो युवा जीवन की ऊर्जा और उत्साह को नष्ट कर देता है।

2. आर्थिक अस्थिरता— रोजगार के बिना आर्थिक स्थिरता की कल्पना नहीं की जा सकती। जब किसी युवा के पास निश्चित आय का स्रोत नहीं होता, तो वह अपने जीवन की बुनियादी आवश्यकताएँ कृ जैसे भोजन, वस्त्र, आवास और शिक्षा कृ पूरी करने में कठिनाई महसूस करता है। इससे उसका जीवन असंतुलित हो जाता है। बेरोजगार युवा परिवार पर निर्भर रहने लगता है, जिससे पारिवारिक बोझ बढ़ता है और संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है।

- आर्थिक अस्थिरता का प्रभाव युवाओं के आत्मविश्वास और सामाजिक छवि पर भी पड़ता है। बिना आय के व्यक्ति अपनी योग्यता और शिक्षा का पूरा उपयोग नहीं कर पाता। कई बार यह आर्थिक कमजोरी युवाओं को अवैध कार्यों की ओर भी प्रेरित करती है।
- इसके अलावा, रोजगार न होने से युवा निवेश, विवाह या भविष्य की योजना नहीं बना पाते। उनकी क्रय शक्ति घटने से समाज की आर्थिक गति भी प्रभावित होती है। इस प्रकार, बेरोजगारी न केवल व्यक्तिगत आर्थिक अस्थिरता पैदा करती है, बल्कि देश की आर्थिक प्रगति को भी धीमा करती है।

3. सामाजिक असुरक्षा और अलगाव— रोजगार का अभाव युवाओं को सामाजिक रूप से भी कमजोर बना देता है। समाज में व्यक्ति की पहचान और प्रतिष्ठा उसके कार्य और उपलब्धियों से होती है। जब युवा बेरोजगार रहता है, तो वह स्वयं को समाज से अलग और हीन महसूस करता है। धीरे-धीरे उसमें सामाजिक असुरक्षा की भावना पनपने लगती है।

- बेरोजगार युवा को अक्सर तिरस्कार या सहानुभूति की दृष्टि से देखा जाता है, जिससे उसका आत्मसम्मान आहत होता है। समाज में उसकी भागीदारी कम हो जाती है, और वह सामाजिक गतिविधियों से दूरी बनाने लगता है। यह दूरी मानसिक अलगाव (social isolation) का कारण बनती है, जिससे अवसाद और आत्मविश्वास की कमी और बढ़ जाती है।
- कई बार सामाजिक असुरक्षा के कारण युवा अपने परिवार या समुदाय से भी दूर हो जाता है और आत्मनिर्भरता की भावना खो देता है। यह स्थिति सामाजिक एकता और स्थिरता के लिए भी खतरा बन जाती है। इस प्रकार, रोजगार का अभाव केवल आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक अलगाव और असुरक्षा की जड़ भी है।

4. अपराध की प्रवृत्ति में वृद्धि— बेरोजगारी और अपराध के बीच गहरा संबंध होता है। जब किसी युवा को ईमानदार परिश्रम से जीवनयापन का अवसर नहीं मिलता, तो वह अक्सर गलत रास्तों की ओर मुड़ जाता है। आर्थिक तंगी, असफलता और सामाजिक दबाव उसे चोरी, धोखाधड़ी, नशाखोरी या हिंसा जैसी गतिविधियों की ओर प्रेरित कर सकते हैं।

- ऐसे युवाओं में समाज और व्यवस्था के प्रति असंतोष बढ़ता है। वे अपने अधिकारों के लिए गलत तरीके अपनाने लगते हैं। अनेक शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि बेरोजगारी वाले क्षेत्रों में अपराध दर अधिक होती है। जब व्यक्ति की बुनियादी आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं और आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है, तो वह अपराध को विकल्प के रूप में देखने लगता है।

- यह प्रवृत्ति न केवल उस व्यक्ति के लिए विनाशकारी है बल्कि पूरे समाज की शांति और सुरक्षा को भी खतरे में डाल देती है। इसलिए कहा जाता है कि बेरोजगारी केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक अपराधों की जननी भी है।

5. प्रतिभा और कौशल का ह्रास— हर युवा में कोई न कोई विशेष प्रतिभा और कौशल होता है। लेकिन जब उसे उचित अवसर नहीं मिलता, तो उसकी यह क्षमता धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है। बेरोजगारी की स्थिति में युवा अपने कौशल का प्रयोग नहीं कर पाते, जिससे उनकी दक्षता और रचनात्मकता घटने लगती है।

- समय बीतने के साथ उनका ज्ञान पुराना हो जाता है और तकनीकी बदलावों के कारण वे नई आवश्यकताओं के अनुरूप खुद को ढाल नहीं पाते। इससे आत्मविश्वास कम होता है और वे आगे के अवसरों से भी वंचित रह जाते हैं।
- इसके अतिरिक्त, समाज की भी हानि होती है, क्योंकि जो युवा देश की उन्नति में योगदान दे सकते थे, वे निष्क्रिय हो जाते हैं। इस प्रकार, बेरोजगारी केवल व्यक्ति की प्रतिभा को नहीं मारती, बल्कि देश की सामूहिक उत्पादकता को भी घटा देती है।

6. प्रवास (Migration)— रोजगार के अभाव का एक बड़ा परिणाम युवाओं का पलायन या प्रवास है। जब स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सीमित होते हैं, तो युवा बेहतर जीवन और आय की तलाश में गाँवों से शहरों या देश से विदेशों की ओर रुख करते हैं। इसे आंतरिक और बाह्य प्रवास कहा जाता है।

- ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या अधिक गंभीर होती है, क्योंकि कृषि पर निर्भरता अधिक है और वैकल्पिक उद्योग या सेवाएँ कम हैं। ऐसे में युवा वर्ग रोजगार की तलाश में महानगरों में जाकर अस्थायी और असुरक्षित नौकरियों में कार्य करता है।
- प्रवास का प्रभाव केवल व्यक्ति या परिवार पर नहीं, बल्कि पूरे समाज पर पड़ता है। गाँवों में श्रमबल की कमी हो जाती है, जिससे कृषि उत्पादन घटता है। दूसरी ओर, शहरों में जनसंख्या बढ़ने से आवास, परिवहन, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी सुविधाओं पर दबाव बढ़ता है।
- इसके अलावा, प्रवासी युवाओं को नई जगहों पर सांस्कृतिक भिन्नता, असुरक्षा और शोषण जैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अतः रोजगार का अभाव न केवल आर्थिक असंतुलन का कारण है, बल्कि सामाजिक और जनसंख्या असंतुलन को भी जन्म देता है।

7. सामाजिक असंतुलन और असंतोष — जब बड़ी संख्या में युवा बेरोजगार रहते हैं, तो समाज में असंतुलन और असंतोष की स्थिति उत्पन्न होती है। बेरोजगारी से उपजी निराशा और असंतोष युवाओं को विरोध, आंदोलन या हिंसात्मक प्रवृत्तियों की ओर ले जा सकता है। वे शासन और सामाजिक व्यवस्था के प्रति विश्वास खो देते हैं।

- ऐसे वातावरण में सामाजिक एकता और स्थिरता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। समाज में वर्गभेद, ईर्ष्या और असमानता की भावना बढ़ती है। बेरोजगार युवा जब देखते हैं कि कुछ वर्ग विशेष को ही अवसर मिल रहे हैं, तो उनमें असंतोष और आक्रोश पनपता है।
- इसके अतिरिक्त, बेरोजगारी सामाजिक अपराधों, नशे, घरेलू हिंसा और आत्महत्या जैसी समस्याओं को भी जन्म देती है। यह सब मिलकर समाज में असंतुलन और अविश्वास का माहौल बना देता है।

- दीर्घकाल में यह स्थिति लोकतांत्रिक व्यवस्था और राष्ट्रीय एकता के लिए भी खतरा बन सकती है। अतः यह आवश्यक है कि समाज में रोजगार के समान अवसर सुनिश्चित किए जाएँ, ताकि युवा अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगा सकें और सामाजिक सामंजस्य बना रहे।

आगे की राह

1. **कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार**— युवाओं के लिए व्यावसायिक और तकनीकी कौशल विकसित करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण केंद्र, कार्यशालाएँ और ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध कराए जाएँ। इससे उनकी रोजगार योग्यताओं में वृद्धि होगी और वे नए उद्योगों एवं क्षेत्रों में अवसर प्राप्त कर सकेंगे।
2. **स्वरोजगार और स्टार्टअप को प्रोत्साहन**— युवाओं को अपने व्यवसाय शुरू करने और नवाचार (Innovation) के अवसर देने हेतु वित्तीय सहायता, सलाहकार सेवाएँ और उद्यमिता प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। यह बेरोजगारी को कम करने के साथ-साथ देश की आर्थिक वृद्धि में योगदान देगा।
3. **औद्योगिक और कृषि क्षेत्र में रोजगार सृजन**— नए उद्योग, फैक्ट्रियाँ और कृषि आधारित छोटे उद्योग स्थापित करके ग्रामीण एवं शहरी युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाए जाएँ। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी और प्रवास की समस्या भी कम होगी।
4. **शिक्षा प्रणाली का व्यावहारिक ज्ञान से जुड़ाव**— शैक्षणिक पाठ्यक्रम में व्यावसायिक कौशल, तकनीकी प्रशिक्षण और रोजगार उन्मुख शिक्षा शामिल की जाए। इससे युवा न केवल शिक्षित होंगे बल्कि अपने कौशल का प्रयोग कर रोजगार प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
5. **सरकारी नीतियों और योजनाओं का सुधार**— युवाओं के लिए रोजगार सृजन, वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और स्वरोजगार योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू किया जाए। यह नीति निर्माण और रोजगार वितरण में पारदर्शिता और दक्षता सुनिश्चित करेगा।

निष्कर्ष

युवाओं में रोजगार का अभाव केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र के विकास के लिए गंभीर चुनौती है। बेरोजगारी से युवा वर्ग में मानसिक तनाव, आत्मविश्वास की कमी, आर्थिक अस्थिरता और सामाजिक असुरक्षा जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इसके परिणामस्वरूप अपराध, नशाखोरी, प्रवास और सामाजिक असंतुलन जैसी स्थितियाँ भी बढ़ती हैं। इस समस्या का प्रभाव न केवल व्यक्तिगत जीवन पर पड़ता है बल्कि समाज और देश की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति को भी प्रभावित करता है। इसलिए आवश्यक है कि सरकार, समाज और शिक्षण संस्थान मिलकर युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने की दिशा में ठोस कदम उठाएँ। कौशल विकास, स्वरोजगार, स्टार्टअप और व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से युवाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। यदि सही नीतियाँ और उपाय समय पर अपनाए जाएँ, तो युवा शक्ति को देश के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कृष्ण, एस. (2020), युवा बेरोजगारी और समाज, दिल्ली: सामाजिक विज्ञान प्रकाशन।
2. सिंह, आर. (2019), भारत में बेरोजगारी की समस्या और समाधान, जयपुर: शिक्षा और समाज पब्लिकेशन।

3. शर्मा, पी. (2021), युवा सशक्तिकरण और रोजगार, मुंबई: विकास प्रकाशन।
4. कुमार, बी. (2018), आर्थिक अस्थिरता और युवा वर्ग, लखनऊ: भारतीय आर्थिक अध्ययन संस्थान।
5. नागपाल, आर. (2022), कौशल विकास और स्वरोजगार, दिल्ली: राष्ट्रीय युवा विकास परिषद।
6. भारतीय रोजगार रिपोर्ट (2023), मिनिस्ट्री ऑफ लेबर एंड एम्प्लॉयमेंट, नई दिल्ली।
7. राय, एस. और जोशी, ए. (2020), युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य और बेरोजगारी, भोपाल: मध्य प्रदेश विश्वविद्यालय प्रकाशन।
8. विश्व बैंक रिपोर्ट (2021), Youth Employment in India, Washington D-C-: World Bank Publications।
9. सरकारी योजना दस्तावेज (2022), प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, नई दिल्ली: भारत सरकार।
10. कृष्णा, ए. (2019), सामाजिक असंतुलन और बेरोजगारी, पटना: सामाजिक अध्ययन प्रकाशन।

